वैश्विक चुनौतियां और महात्मा गांधी का संदेश

आमना मिर्जा*

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के दायरे में महात्मा गॉधी के विचारों की प्रासंगिकता एवं दृढ़ता की सर्वकालिकता सर्वत्र प्रमाणित है। उनके मूल्यों की पहुॅच मानवीय आधारों को छूती ही नहीं है बल्कि उसके समुचित एवं समग्र समाधान की कुंजी भी है। एक सन्दर्भ में यहॉ उनका आदर्शवादी होना स्थापित जरुर होता है वहीं दूसरी तरफ़ उनके मूल्यों की विशिष्टता किसी भी सीमाओं के चरम को प्राप्त भी करती है। अत: वे सैद्धांतिक रूप से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के सारे मूल्यों-मानकों को अपने आप में समेटें एक विस्तृत अध्ययन की खुली दास्तान भी बन जाते हैं। गॉधी जिन मूल्यों-आदर्शों के आग्रही थे उसका फ़ैलाव किसी एक राष्ट्र, सरकार, संगठन या सीमाओं का बंधन नहीं हो सकता था। उनके यहॉ भविष्य का आकलन आगत का सत्य था और स्थितियों को व्यापक संदर्भ में समझने का मजबूत हथियार भी। दूसरी तरफ़, उनके विचारों का फ़लक बहुत विस्तृत था लेकिन सारे का निचोड़ मानवीय करुणा, साहचर्य, समर्पण के आगोश का हिमायती भी था। उनके यहॉ मूल्यों की कसौटी का एक मात्र आधार था सहजीविता और साहचर्य के साथ जीना, जिसमें प्रत्येक मनुष्य को जीवंत बने रहने की लालसा बलवती हो सके। यही कारण था कि वह अपने सिद्धांतों के प्रति अंतिम सांस तक प्रतिबद्ध रहे और ऐसा कुछ छोड़ गए जो आने वाली पीढ़ी-दर-पीढ़ी को सचेत करता रहे। अहिंसा और सत्याग्रह के दर्शन को असंदिग्ध रूप से गांधी जी के राजनीतिक दर्शन में धुरी का स्थान प्राप्त है।

21वीं सदी में भी महात्मा गांधी के विचार उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उनके समय में थे और वे ऐसी अनेक समस्याओं का समाधान कर सकते हैं, जिनका सामना आज विश्व कर रहा है। एक ऐसे विश्व में जहां आतंकवाद, कट्टरपंथ, उग्रवाद और विचारहीन ऩरत देशों और समुदायों को विभाजित कर रही है, वहां शांति और अहिंसा के महात्मा गांधी के स्पष्ट आश्वान में मानवता को एकजुट करने की शक्ति है। उन्होंने न सिर्फ भारत की आजादी में अहम भूमिका निभाई बल्कि कई देशों में वे प्रेरणा का स्रोत बनें। 4 महादेशों और 14 देशों में उन्होंने लोगों को नागरिक अधिकार आंदोलनों के लिए प्रेरित किया और एक आदर्श समाज की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया। भारत में उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ़ सविनय अवज्ञा जैसे आंदोलन से ब्रिटिश शासन पर आघात किया। देश की आजादी के वे आवाज बने और देश को एक धागे में पिरोने का काम किया। गांधी जी के कार्य का दायरा सिर्फ आजादी के आंदोलनों तक ही सीमित नहीं था। उन्होंने एक बेहतरीन समाज और देश के निर्माण के हर पहलुओं पर काम किया। उनकी अहिंसा, शांति और सत्याग्रह के विचारों की ज्वाला वैश्विक जन-मानस के कल्याण एवं वर्गविहीन समाज बनाने में सक्षम है। उनके जीवन का एकमात्र संदेश था कि कैसे समाज में मानववादी भावों को सहिष्णुता के वैश्विक प्रतीक के रूप में ग्राह्य बनाया जाय? जिसने सत्य और सारभौमिक प्रेम की महत्ता को सर्वसुलभ बनाते हुए मानवता के उस अंतिम छोर तक पहुॅचाने को अपना लक्ष्य बनाया जिसे सदियों से दुत्कारा गया था।

**Assistant Professor, Political Science, SPM College, University of Delhi*